भजन

तर्ज...जब तुम मुझे अपना

इक देखा ऐसा मयखाना, जहां हर कोई दीवाना है
सबकी आँखों में मस्ती है, और हाथों में पैमाना है

1) सुनी खनक जो इश्के प्यालों की,और दिल में कसक सी जाग उठी
वो आ जाएँ इस महफिल में, बस जिनको पीना पिलाना है।

2) वो देते रहे अंदाजों सें, और लेते रहे हम नाजों से
हर अदा पे तेरी मिटने को, बेताब जिगर दीवाना है

3) कभी नज़रों से कभी अधरों से, सब होश हवास उड़ाए हैं
जब होश में आए तो देखा तेरे,पहलू में मेरा आशियाना है।

4) वो देते रहे हम लेते रहे, ये ही दौर चला है शामों सहर
सकी हममें हम साकी में, आलम ये बहुत सुहाना है